प्रश्न–"कुतुबुद्दीन ऐबक महान सेनानायक था।" सिद्ध कीजिए।

उत्तर—

दास कौन थे?

प्राचीन काल में लड़कों और लड़कियों को दास के रूप में खरीदा जाता था। इन दासों को सुल्तान पुत्र से भी अधिक प्यार करते थे। राजनीतिक दृष्टिकोण से इन दासों का विशेष महत्व था जैसा इस सम्बन्ध में लेनपूल ने लिखा है कि, "एक योग्य शासक का पुत्र असफल हो सकता था किन्तु कभी-कभी उसके दास अपने स्वामी के समान प्रतिभापूर्ण सिद्ध होते थे।" मोहम्मद गौरी अपने गुलामों को पुत्र से भी प्यारा समझता था। उसके कोई पुत्र नहीं था। जब कभी कोई उससे पुत्र के विषय में बात किया करता था तो वह कहा करता था कि "क्या तुर्क गुलामों के रूप में मेरे हजारों पुत्र नहीं हैं।"

कुतुबुद्दीन ऐबक तथा उसका शासन-काल (Reign)

कुतुबुद्दीन ऐबक का प्रारम्भिक जीवन—कुतुबुद्दीन तुर्किस्तान में पैदा हुआ था। बचपन में ही अपने सम्बन्धियों से बिछुड़ जाने के पश्चात् 'निशापुर' के प्रधान काजी फखरुद्दीन अब्दुल अजीज कूफी ने उसको खरीद लिया था। फखरुद्दीन की मृत्यु के पश्चात् कुतुबुद्दीन को 'मोहम्मद गौरी' ने खरीद लिया। उसके सैनिक गुणों से आकर्षित होकर मोहम्मद गौरी ने उसे अपने सेनापति के पद पर नियुक्त कर दिया। हिन्दुस्तान की विजय के समय वह उसको अपने साथ लाया था तथा हिन्दुस्तान की विजय के बाद उसको अपने भारतीय साम्राज्य का गवर्नर बनाकर छोड़ गया था। कुतुबुद्दीन ऐबक के विषय में लेनपूल ने कहा है कि "वह भारत में मुस्लिम साम्राज्य का वास्तविक निर्माता था।"

गवर्नर के रूप में ऐबक की उपलब्धियाँ—यद्यपि कुतुबुद्दीन ऐबक मोहम्मद गौरी की अनुपस्थिति में उसके भारतीय साम्राज्य का संरक्षक बनाया गया था, किन्तु ऐबक ने गौरी के गवर्नर के रूप में ही अधिक ख्याति प्राप्त की थी। इस सम्बन्ध में लेनपूल ने लिखा है कि "ऐबक ने प्रमुख सफलता गवर्नर के रूप में ही प्राप्त की थी। मोहम्मद गौरी के गजनी चले जाने के बाद ऐबक ने गवर्नर के रूप में मेरठ, कालिंजर, महोबा आदि को जीतकर गौर साम्राज्य की सीमा बढ़ाई। उसने 1195 ई० में गुजरात को जीता, 1202 ई० में कालिंजर के चन्देल राजा परमाल को परास्त करके कालिंजर के अभेद्य

Scanned with CamScanner

दुर्ग पर अधिकार कर लिया। 1205 ई० में खोखर जाति के युद्ध में ऐबक ने सुल्तान मोहम्मद गौरी की सहायता की थी। लेनपूल ने कहा है कि "ऐबक तथा बख्त्यार की शक्ति ने ही मोहम्मद गौरी की सफलताओं को पूर्ण किया था और लगभग विन्ध्याचल पर्वत के उत्तर का सम्पूर्ण भारत मुसलमानों के प्रभाव में था।" ऐबक की उन्नत अवस्था के सम्बन्ध में डॉ० आशीर्वादी लाल का मत है कि, "कुतुबुद्दीन एक महान सेनानायक और प्रतिभापूर्ण सैनिक था तथा अपनी निम्न एवं दरिद्र अवस्था से उठकर यश की चोटी पर पहुँच गया था।"

कुतुबुद्दीन ऐबक सुल्तान के रूप में—1206 ई० में मोहम्मद गौरी का वध कर दिये जाने के बाद उसकी स्वयं की कोई सन्तान न होने के कारण 24 जून को कुतुबुद्दीन ऐबक मोहम्मद गौरी के जीते हुए सभी प्रदेशों का शासक बन गया। अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए उसने 'गजनी' के दास शासक 'ताजुद्दीन अल्दौज' की कन्या से विवाह किया। अपनी एक कन्या का विवाह उसने 'कुबाचा' तथा दूसरी कन्या का विवाह गुलाम 'शमशुद्दीन इल्तुतमिश' से कर दिया था। इस प्रकार कुतुबुद्दीन ने अपनी शक्ति बढ़ा ली थी किंतु इतना होते हुए भी उसके सामने निम्नलिखित कठिनाइयाँ थीं।

ऐबक की प्रारम्भिक समस्यायें

(1) ऐबक के सम्राट होने के समय गजनी में अल्दौज, मुल्तान में कुबाचा लखनौती में 'अखतारुद्दीन' ने अपने शासन स्थापित कर लिये थे। (2) देश में पराजित राजपूत वंश अपनी शक्ति बढ़ाने में लगे हुए थे। (3) थोड़े काल बाद बिहार में अख्तारुद्दीन की मृत्यु होने के कारण अराजकता फैली। ख्वारिज्म का शाह दिल्ली और गजनी के राज्यों को हड़प लेने के प्रयत्न कर रहा था। (4) गहड़वार के शासक राजा हरिश्चन्द्र की फर्रुखाबाद और बदायूँ में सत्ता स्थापित हो चुकी थी। ग्वालियर पर प्रतिहार राजपूतों का आधिपत्य स्थापित हो चुका था।

कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा समस्याओं पर विजय प्राप्ति—इन सब समस्याओं पर उसने विजय प्राप्त की। (1) उसने 'यलदौज' की कन्या से विवाह करके अपनी शक्ति बढ़ाई। (2) 1208 ई० में 'नासिरुद्दीन कुबाचा' पर आक्रमण करके विजय प्राप्त की। (3) बंगाल के विद्रोह को भी उसने शान्त कर दिया। उसने अल्दौज की पुत्री से विवाह इसीलिए किया ताकि वह अपने उद्देश्य में सफल हो।

कुतुबुद्दीन ऐबक की आकस्मिक मृत्यु—1210 ई० में पोलो खेलते हुए घोड़े से गिरकर उसका देहान्त हो गया। उसके मृत शरीर को 'लाहौर' में दफनाया गया और वहीं उसका मकबरा बनाया गया, जो कि भारत में प्रथम स्वतन्त्र तुर्की सुल्तान की याद दिला रहा है। इस सम्बन्ध में डॉ० आशीर्वादी लाल जी ने लिखा है कि, "1210 ई० में उसकी मृत्यु पोलो खेलते हुए घोड़े से गिरकर घातक रूप से घायल हो जाने के कारण हो गई। उसे लाहौर में दफनाया गया। उसके अवशेषों पर एक अति साधारण मकबरा बनवाया गया जो उत्तरी भारत के प्रथम स्वतन्त्र तुर्क सुल्तान की शान के योग्य कदापि न था।"

कुतुबुद्दीन ऐबक का चरित्र-चित्रण (Characterisation)

कुतुबुद्दीन ऐबक के चरित्र की मुख्य विशेषताएं

कुतुबुद्दीन के चरित्र में एक महान सेनानायक के सभी गुण विद्यमान थे जिनके बल पर उसने एक साम्राज्य का निर्माण किया। शासन प्रबन्ध करने में भी उसने अपनी कुशलता का पूर्ण परिचय दिया वह भारत वर्ष में तुर्की राज्य का संस्थापक माना जाता है। उसकी योग्यता के सम्बन्ध में डॉ० ए० के० निजामी ने लिखा है कि, "ऐबक उच्च कोटि

Scanned with CamScanner

का सेनानायक था। उत्तर भारत की विजय का श्रेय जितना मुईजुद्दीन (मोहम्मद गौरी) की अटूट लगन को है, उतना ही ऐबक की निरन्तर सतर्कता को है।" हसन निजामी का कथन है कि, "उसने अपने विस्तृत प्रान्तों का न्याय के साधनों से शासन प्रबन्ध किया और उसके राज्य में प्रजा सुखी थी।" न्यायशीलता का वर्णन करते हुए लेनपूल ने लिखा है कि, "उसके राज्य में शेर और बकरी एक घाट पर पानी पीते थे और सड़कें डाकुओं से स्वतन्त्र थीं, हिन्दू ऊँचा हो या नीचा आदर की दृष्टि से देखा जाता था।" हसन निजामी का मत है कि, "कुतुबुद्दीन अपनी प्रजा को समान रूप से न्याय प्रदान करता था और अपने राज्य की शान्ति तथा समृद्धि के लिए प्रयासशील था।' उसके न्याय का वर्णन करते हुए विद्वानों ने उसे 'लाखबख्श' की उपाधि दी है किन्तु इतना होते हुए भी कुतुबुद्दीन ऐबक एक कट्टर मुसलमान था। यद्यपि उसमें धार्मिक सहिष्णुता थी फिर भी वह इस्लाम के रक्षक के रूप में महान् सैनिक था जैसा कि प्रसिद्ध इतिहासकारों ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि, "ऐबक ने अपने राज्य को मित्रों से भरपूर और शत्रुओं से खाली कर दिया था। वह उदार भी था और साथ ही नृशंस भी।" लेनपूल का कथन है कि, "वह कट्टर मुसलमान था। यद्यपि उसने अपने अधीन शक्तिशाली हिन्दू शासकों के प्रति सहिष्णुता की नीति का पालन किया परन्तु वह धार्मिक उन्नति के लिए खुदा की राह का लड़ाकू था।"

प्रो० ए० बी० एम० हबीबुल्ला के मतानुसार, "उसमें एक तुर्क का साहस और एक ईरानी की उदारता और सुसभ्यता का मिश्रण था।"

Scanned with CamScanner